भारत सरकार

वित्त मंत्रालय

वित्तीय सेवाएं विभाग

**राज्य सभा**

**तारांकित प्रश्न संख्या \*13**

(जिसका उत्तर 22 नवम्बर, 2011/01 अग्रहायण, 1933 (शक) को दिया जाना है)

**भारतीय रिजर्व बैंक से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा लिए जाने वाले ऋणों में वृद्धि**

\*13. श्री बलवंत उर्फ बाल आपटेः

 क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों को गिरवी रखकर भारतीय रिजर्व बैंक से लिए जाने वाले ऋण में हुई अत्यधिक वृद्धि पर ध्यान दिया है;

(ख) यदि हां, तो गत तीन वर्षों में प्रतिवर्ष और चालू वित्तीय वर्ष के दौरान तत्संबंधी बैंक-वार ब्यौरा क्या है;

(ग) उक्त अवधि के दौरान लिए गए ऋण में वृद्धि होने के क्या कारण हैं; और

(घ) इस बाजार हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव का ब्यौरा क्या है?

**उत्तर**

वित्त मंत्री (श्री प्रणब मुखर्जी)

**(क) से (घ):** एक विवरण सदन के पटल पर रख दिया गया है।

\*\*\*\*\*

**भारतीय रिजर्व बैंक से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा लिए जाने वाले ऋणों में वृद्धि के संबंध में श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे द्वारा पूछे गए दिनांक 22 नवम्बर, 2011 के राज्य सभा तारांकित प्रश्न संख्या \*13 से संबंधित विवरण।**

**(क):** सरकारी क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) सहित अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) को बनाए रखने के लिए अपनी सांविधिक अपेक्षा के भाग के रूप में सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक बैंकिंग प्रणाली में दैनिक चलनिधि का प्रबंधन अपनी चलनिधि समायोजन सुविधा के माध्यम से करता है और यह सुविधा अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों को उपलब्ध है। इस सुविधा के तहत, कम चलनिधि वाले बैंक सरकारी प्रतिभूतियों को ऋणादार (कोलेटरल) के रूप में रखकर 'रेपो' दर (वर्तमान में 8.5 प्रतिशत) पर एक दिन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक से उधार ले सकते हैं। यह उत्कृष्ट अंतर्राष्ट्रीय पद्धतियों के अनुरूप है।

**(ख):** विगत तीन वर्षों एवं चालू वित्तीय वर्ष के दौरान सरकारी क्षेत्र के बैंकों के साथ भारतीय रिजर्व बैंक के 'एलएएफ' परिचालनों का ब्यौरा नीचे दिया गया हैः

(करोड़ रूपए)

|  |  |
| --- | --- |
| **वर्ष** | **सरकारी क्षेत्र के बैंकों द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक से 'एलएएफ' के तहत औसत निवल दैनिक उधार** |
| 2008-09 | (-) 5,938 |
| 2009-10 | (-) 62,562 |
| 2010-11 | (+) 30,427 |
| 2011-12 (15 नवम्बर, 2011 तक) | (+) 17,867 |

टिप्पणीः (-) बैंकों द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के पास निधियों का नियोजन दर्शाता है तथा (+) बैंकों द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक से उधार दर्शाता है। आंकड़े वार्षिक औसत के आधार पर हैं।

 'एलएएफ' परिचालनों का बैंक-वार ब्यौरा **अनुबंध** के रूप में संलग्न है।

**(ग):** बैंकों द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक से उधार लेने के लिए सरकारी प्रतिभूतियों को ऋणाधार के रूप में रखना बैंकों के लिए एक सामान्य परिचालन है और प्रणाली में समग्र चलनिधि की कमी होने पर ही ऐसा होता है।

**(घ):** हाल ही में बैंकों ने भारतीय रिजर्व बैंक से जो निवल उधार लिया है वह घाटे की चलनिधि स्थिति का प्रतीक है। इससे मौद्रिक संचरण तंत्र को सुदृढ़ करने में सहायता मिली है तथा यह मौद्रिक नीति के मुद्रास्फीतिकारी दृष्टिकोण के अनुरूप है।

\*\*\*\*\*